५१८ बंबई, श्रावण वदी ९, १९५०

'योगवासिष्ठ'–जीवमें जिस प्रकार त्याग, वैराग्य और उपशम गुण प्रगट हों, उदयमें आयें, वह प्रकार ध्यानमें रखनेका समाचार जिस पत्रमें लिखा, वह पत्र प्राप्त हुआ है।

ये गुण जब तक जीवमें स्थिर नहीं होते तब तक जीवसे आत्मस्वरूपका यथार्थरूपसे विशेष विचार होना कठिन है। आत्मा रूपी है, अरूपी है, इत्यादि विकल्पोंका जो उसके पहले विचार किया जाता है, वह कल्पना जैसा है। जीव कुछ भी गुण प्राप्तकर यदि शीतल हो जाये तो फिर उसे विशेष विचार कर्तव्य है। आत्मदर्शनादि प्रसंग, तीव्र मुमुक्षुता उत्पन्न होनेसे पहले प्रायः कल्पितरूपसे समझमें आते हैं, जिससे अभी तत्संबंधी प्रश्न शांत करने योग्य है। यही विनती।